ISSN-2582-144X
कृषि शोध पत्रिका
कृषि मञ्जूषा
अक्टूबर 2020 • संस्करण 03 • अंक 01

संपादकीय

कृषि मञ्जूषा हिंदी पत्रिका का तृतीय वर्ष में प्रथम अंक प्रस्तुत करते हुए संपादक मण्डल अपार हर्ष से ओत-प्रोत है। आप सभी ने पत्रिका में प्रकाशित जानकारी को सराहा और अपना अनुपम स्नेह दिया, इसके लिए हम हृदय से आभारी हैं। पत्रिका को यह गौरव दिलाने में आप सभी सुधि पाठकगणों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस अवसर पर हम अपने सभी अनुभवी कृषि वैज्ञानिकों एवं रचनाकारों का भी अभिनंदन करते हैं, वे अपनी व्यस्ततम दिनचर्या से समय निकाल कर 'कृषि मञ्जूषा' पत्रिका के लिए अपनी शोध तथा अनुभवों को सरल व सुगम हिंदी भाषा मे लिपिबद्ध करते हैं। समय निर्बाध गति से चलायमान है, करोना का कहर भी धीरे-धीरे काल के गाल मे समाहित हो जाएगा, इसमें कोई दो राय नही है। हम अपने प्रबुद्ध रचनाकारों के आभारी हैं, जो इन विषम परिस्थितियों मे भी अपने लेख / रचनाएँ अनवरत प्रेषित करते रहते हैं। हमेशा की तरह इस बार की समीक्षा धान (चावल) की आर्थिकी पर आधारित है। ज्ञात हो, कि धान भारत की प्रमुख खाद्यान फसल है, जिसकी खेती मुख्य रूप से खरीफ मौसम में होती है। अन्य आकर्षण में फसल पोषण के लिए जैविक उर्वरक के रूप में समुद्री शैवाल का प्रयोग, माइक्रोग्रीन एवं स्वास्थ्य पर ज्ञानवर्धक लेख है। फल एवं सब्जी भारत में पोषण सुरक्षा के मुख्य स्रोत, अदरक का औषधीय महत्त्व एवं उत्पादन तकनीकी, पादप रोग प्रबंधन में रोबोटिक्स का अनुप्रयोग, जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य मे फल उत्पादन एवं फसल की योजना और प्रबंधन के लिए जल बजट और लेखा परीक्षक की भूमिका, उत्पादक स्तर पर दुग्ध का संदूषण एवं बचाव के उपाय, पशुओं के टीका कारण सहित कई अन्य विषयों पर ज्ञानवर्धक जानकारी से भरपूर एवं रोचक सामाग्री प्रस्तुत की जा रही है।

जैसा आप अभी सुधि पाठकों को विदित है कि वर्ष 2 अंक 2 (अप्रैल, 2020) के संपादकीय में इस बात की चर्चा की गई थी कि नए वर्ष से 'कृषि मञ्जूषा' शोध पत्रिका की तरह अवतरित होगी, पृष्ठभूमि यह थी कि हमारी मातृभाषा हिंदी में कृषि शोध पत्रिका का नितांत अभाव है। इसीलिए बहुत दिनों से हिन्दी में कृषि शोध पत्रिका की माँग, शोधकर्ताओं की तरफ से लगातार बनी हुई थी। इसी को ध्यान में रखते हुए पत्रिका का यह अंक नए कलेवर के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। कृषि मञ्जूषा का यह अंक पूर्णतयः ना तो शोध पत्रिका है ना ही यह पूर्वत की भांति सामान्य कृषि पत्रिका द्वितीय है। वर्ष द्वितीय वस्तुतः यह मिश्रित अंक है। देखा जाय तो इस अंक के साथ 'कृषि म्रजूषा' ने शोध पत्रिका बनाने की तरफ अपना पहला कदम बढ़ा दिया है। ऐसा करके सम्पादक मंडल, शोध पत्रिका की माँग की आपूर्ति करने में सफल रहे है। इस हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आगामी अंक पूर्णतयः शोध पत्रिका ही होगी, इस हेतु इसी अंक में हिंदी में शोध पत्र लेखन 'लेखकों के लिए दिशा-निर्देश' हेतु अलग से प्रकाशित किया जा रहा है। आप सभी लेखकगणों / शोधकर्ताओं से अनुरोध है कि अपनी शोध रचना को पत्रिका के अनुरूप ही भेजे जिसके लिए आप इस अंक में प्रकाशित प्रथम लेख का आंशिक रूप से अनुसरण कर सकते है। हिंदी में लोकप्रिय एवं तकनीकी लेखों हेतु हम ऑन लाइन 'e-पत्रिका खेती' की शुरुआत कर रहे है, आप अपने लेख हमें अनवरत e-mail पर भेजते रहे। हमारा का पता है : e-kheti.2020@gmail.com जैसे आप पूर्व में भेजते आये है। आपके लोकप्रिय तकनीकी लेखों को यथाशीघ्र ऑन लाइन https://e-kheti-jsure-org-in/ प्रकाशित किया जाएगा।

आपके विचार, राय, सुझाव एवं प्रतिक्रिया, हमारे उत्साहवर्धन के साथ-साथ पत्रिका की गुणवत्ता सुधार में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, अतः आप अपने विचार krishi-manjusha@gmail-com पर अवश्य प्रेषित करते रहें। अंत में, मैं अपनी बात को डा. आशुतोष उपाध्याय के सन्देश के साथ विराम देना चाहूँगा-

अन्नदाता आत्मनिर्भर बने उसको सुविधा व काम मिले, जो उपजाया उसने मेहनत से उसको समुचित दाम मिले।
नई तकनीकों का करके उपयोग उसको भी आराम मिले, दुगनी हो जाए आय उसकी और कृषि क्षेत्र में नाम मिले।।

शुभकामनाओं सहित सादर,

(अनिल कुमार सिंह)
प्रधान संपादक